

अवैध खनन से नपिटने के लिये भू-स्थानिकी सर्वेक्षण

चर्चा में क्यों?

हाल ही में हरियाणा ने राजस्थान सीमा के पास [अरावली पर्वतमाला](#) का [भू-स्थानिकी सर्वेक्षण](#) करने का आदेश दिया है। इस सर्वेक्षण में हरियाणा में प्रतबंधित [खनन क्षेत्रों](#) का सीमांकन किया जाएगा और [अवैध खनन पर अंकुश](#) लगाने के लिये राजस्थान में लाइसेंस प्राप्त खदानों की पहचान की जाएगी।

मुख्य बंदि

- **सर्वेक्षण का परिचय:**
 - हरियाणा अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (HARSAC) द्वारा आयोजित इस सर्वेक्षण का उद्देश्य **वभिन्न पहाड़ियों पर हरियाणा और राजस्थान के अधिकार क्षेत्र को परिभाषित करना** और राजस्व रिकॉर्ड को अद्यतन करना है।
- **क्षेत्राधिकार संबंधी मुद्दों पर विचार:**
 - **अवैध खनन** माफिया अरावली पहाड़ियों पर अधिकार क्षेत्र की अस्पष्टता का लाभ उठाते हैं।
 - परिवर्तन ब्यूरो ने रवा गाँव में 6,000 मीटरके टन पहाड़ी से अवैध खनन के लिये [प्रथम सूचना रिपोर्ट \(FIR\)](#) दर्ज की।
- **अवैध खनन:**
- **परिचय:**
 - अवैध खनन, सरकारी प्राधिकारियों से **आवश्यक परमिट, लाइसेंस या वनियामक अनुमोदन के बिना** भूमि या जल नकियों से खननों, अयस्कों या अन्य मूल्यवान संसाधनों का नष्टिकरण है।
 - इसमें पर्यावरण, श्रम और सुरक्षा मानकों का उल्लंघन भी शामिल हो सकता है।
- **समस्याएँ:**
- **वातावरण संबंधी मान भंग:**
 - इससे वनों की कटाई, मृदा क्षरण और जल प्रदूषण हो सकता है तथा [वन्य जीवों](#) के पर्यावास नष्ट हो सकते हैं, जिसके गंभीर पारिस्थितिक परिणाम हो सकते हैं।
- **परसिकटमय:**
 - अवैध खनन में अक्सर [पारा](#) और [साइनाइड](#) जैसे खतरनाक रसायनों का उपयोग होता है, जो खनकों और आसपास के समुदायों के लिये गंभीर स्वास्थ्य संकट उत्पन्न कर सकते हैं।
- **राजस्व की हानि:**
 - इससे **सरकारों को राजस्व की हानि हो सकती है**, क्योंकि खननकरता उचित कर और रॉयल्टी का भुगतान नहीं कर पाएँगे।
 - इसका महत्वपूर्ण आर्थिक प्रभाव हो सकता है, विशेषकर उन देशों में जहाँ प्राकृतिक संसाधन राजस्व का प्रमुख स्रोत हैं।
- **मानवाधिकार उल्लंघन:**
 - अवैध खनन के परिणामस्वरूप [मानव अधिकारों का उल्लंघन](#) भी हो सकता है, जिसमें ज़बरन श्रम, बाल श्रम और सुभेद्य आबादी का शोषण शामिल है।

अरावली

- **परिचय:**
 - अरावली पर्वतमाला गुजरात से राजस्थान होते हुए दिल्ली तक वसित है, इसकी लंबाई 692 किलोमीटर तथा चौड़ाई 10 से 120 किलोमीटर के बीच है।
 - यह शृंखला एक प्राकृतिक हरित दीवार के रूप में कार्य करती है, जिसका 80% भाग राजस्थान में तथा 20% हरियाणा, दिल्ली और गुजरात में स्थित है।
 - अरावली पर्वतमाला दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित है - सांभर सरिही श्रेणी और राजस्थान में सांभर खेतड़ी श्रेणी, जहाँ इनका विस्तार लगभग 560 किलोमीटर है।
 - यह [थार रेगिस्तान](#) और [गंगा के मैदान](#) के बीच एक इकोटोन के रूप में कार्य करता है।
 - इकोटोन वे क्षेत्र हैं जहाँ दो या अधिक पारिस्थितिक तंत्र, जैविक समुदाय या जैविक क्षेत्र मिलते हैं।
 - इस पर्वतमाला की सबसे ऊँची चोटी गुरुशिखर (राजस्थान) है, जिसकी ऊँचाई 1,722 मीटर है।

■ अरावली का महत्त्व:

- अरावली परवतमाला थार रेगसिस्तान को सधु-गंगा के मैदानों पर अतकिरण करने से रोकती है, जो ऐतहासिक रूप से नदियों और मैदानों के लिये जलग्रहण कक्षेत्र के रूप में कार्य करती है।
- इस कक्षेत्र में **300 देशी पौधों की प्रजातियाँ**, 120 पक्षी प्रजातियाँ तथा सयार और नेवले जैसे वशिष्ट पशु मौजूद हैं।
- **मानसून** के दौरान, अरावली पहाड़ियाँ **मानसून के बादलों को पूर्व की ओर नरिदेशति करती हैं**, जिससे उप-हमालयी नदियों और उत्तर भारतीय मैदानों को लाभ होता है। सर्दियों में, वे **उपजाऊ घाटियों को शीत पश्चिमी पवनों से बचाते हैं**।
- यह रेंज वर्षा जल को अवशोषति करके **भूजल पुनःपूरति में सहायता करती है**, जिससे भूजल स्तर पुनरजीवति होता है।
- अरावली **दलिली-NCR के लिये "फेफड़ों" के रूप में कार्य करती है**, जो कक्षेत्र के गंभीर वायु प्रदूषण के कुछ प्रभावों को नमिन करती है।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/geospatial-survey-to-combat-illegal-mining>

